# चिकित्सा सत्यापन के दौरान अतिरिक्त लक्षणों की प्राप्ति

● डा० अनिल खुराना

होम्योपैथिक साहित्य में विभिन्न स्रोतों जैसे कि लवण, खनिज, वनस्पति या उत्तकक्षयों इत्यादि से प्राप्त स्रोतों का विवरण उदृत है। इन औषधियों की रोग साध्यक क्षमता का आंकलन औषध प्रमाणन से प्राप्त विशिष्ट लक्षणों एवं चिन्हों से होता है। साहित्य में अभी बहुत सी ऐसी औषधियां हैं जो पूर्ण रूप से प्रमाणित नहीं मानी जा सकतीं। होम्योपैथी के विकास में इन औषधियों का प्रमाणन आवश्यक है ताकि इनसे प्राप्त लक्षणों एवं चिन्हों के द्वारा होम्योपैथिक मेटिरिया मैडिका की अभिवृद्धि कर रोग साध्यकता का विकास हो।

औषध प्रमाणन से प्राप्त लक्षणों एवं चिन्हों का चिकित्सीय सत्यापन होने के बाद ही उसकी पूर्ण प्रमाणित माना जाता है। इसलिए प्रमाणन उपरान्त चिकित्सीय सत्यापन द्वारा न केवल उपलब्ध लक्षणों एवं चिन्हों की पुष्टि होती है वरन् कुछ नये लक्षणों की भी प्राप्ति होती है जो इन औषधियों द्वारा चिकित्सा के दौरान ह्रास होते हैं।

परिषद् ने इसी कार्य हेतु तीन चिकित्सा सत्यापन इकाइयों की स्थापना की हुई है, जो पटना, वृंदावन तथा गाजियाबाद में स्थित है एवं यह कार्य क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ तथा चिकित्सा अनुसंधान इकाई, जयपुर पर भी चल रहा है।

इस अध्ययन के दौरान विभिन्न अतिरिक्त लक्षणों का संग्रहण किया गया है जिसका पुर्नसत्यापन होने पर, औषध की रोगसाध्यक क्षमता में सम्मिलित किया जायेगा।

# एड्स रोग की चिकित्सा में क्या होम्योपैथी की भूमिका है?

● डी०पी० रस्तोगी, वी०पी० सिंह

एड्स जो कि एक रिट्रोवायरस (एच०आई०वी०) के संक्रमण द्वारा होता है एवं जिसमें अवसरवादी संक्रमणों तथा कापोसिस सारकोमा (कैंसर) का होना विशेष है एवं जिन रोगियों ने इम्यूनोइलास उत्पन्न करने वाली औषधियों का सेवन नहीं किया है। इस रोग का आरम्भ कहां से हुआ यह अभी ज्ञात नहीं है परन्तु मनुष्यों में इसका प्रथमतः अमेरिका में पता चला।

इस रोग का ज्ञान 1981 में उस समय हुआ जब समलैंगिक रोगियों में फेफड़ों के शोथ जो विशेष प्रकार के कीटाणुओं से होता है एवं जो सामान्य रूप से नहीं पाया जाता एवं त्वचा कैंसर, कापोसिस सारकोमा का होना। इन रोगियों में इम्यूनोहलास के लक्षण जो कोशिकाओं से संबंधित थे, प्रकट हुए। 1982 में इस रोग के बारे में सम्पूर्ण विवरण, लक्षण, रोग विकास क्रम एवं उसके दुष्प्रभाव इत्यादि से संबंधित रिपोर्ट प्रकाशित हुई। इस संलक्षण को एड्स नाम दिया गया। तदन्तर यह एक विश्वव्यापी रोग समस्या बन गई है।

जुलाई, 1991 तक इस रोग से पीड़ित 3,71,803 रोगियों का 169 देशों में, विश्व स्वास्थ्य संगठन के माध्यम से पता लग चुका था। इसमें 1,79,139 रोगी केवल अमेरिका में थे। अक्तूबर, 1991 तक एड्स के भारत में 85 रोगियों का पता लग चुका था।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि शताब्दी के इस अन्तिम दशक में भारत में भी इस रोग से पीड़ित रोगियों की संख्या बढ़ने वाली है जो भयंकर विकराल रूप लेने वाली है।

इस पेपर में इस रोग से सम्बन्धित सम्पूर्ण विभागों का संक्षिप्त विवरण एवं होम्योपैथी की भूमिका का ब्यौरा दिया गया है।

# औषध प्रमाणन — एक साहित्यिक सर्वेक्षण

● ओ०पी० वर्मा

होम्योपैथिक जगत में, केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा स्थापित अनुसंधान संस्थानों में अग्रणी मानी जाती है। भारत के विभिन्न भागों में स्थित 51 इकाईयों/संस्थानों में बहुआयामी प्रकार के अनुसंधान कार्यों की शुरुआत, निर्देश तथा संचालन का उत्तरदायित्व परिषद् पूरा कर रही है। वर्तमान में परिषद्, महामारी चिकित्सा सत्यापन, औषध अनुसंधान, मानकीकरण, सर्वेक्षण एवं संग्रहण तथा चिकित्सीय अनुसंधान तथा औषध प्रमाणन इत्यादि कार्यों में लगी हुई है।

परिषद् के मुख्यालय में प्रलेखन विभाग के अंतर्गत एक पुस्तकालय की भी स्थापना की गई है जिसका मुख्य उद्देश्य है, अनुसंधानकर्ताओं को विभिन्न विषयों पर सामयिक जानकारी उपलब्ध कराते रहना जिसके अंतर्गत मुख्यतया साहित्यिक सर्वेक्षण, सामयिक साहित्य सूचना प्रसारण सेवा आती है।

औषध प्रमाणन जो कि किसी भी औषध की रोग साध्यक क्षमता ज्ञात करने का एक विशिष्ट तरीका है एवं जिसकी होम्योपैथी के विकास क्रम में प्रमुख भूमिका है से संबंधित विभिन्न जर्नल, पत्रिकाओं, इत्यादि में प्रकाशित हुई है उन औषधियों की विषय सूची तैयार की गई है ताकि जब भी किसी औषध से संबंधित औषध प्रमाणन लक्षणों की जानकारी तुरन्त उपलब्ध की जा सके।

# एलोक्सन का शक्तिकृत अवस्था में मधुमेह की स्थिति में प्रतिकूल प्रभाव का मूल्यांकन — एक प्रयोगात्मक प्रयास

● डी०पी० रस्तोगी, वी०एम० नागपाल, सुनील कुमार

इस प्रयोग के अंतर्गत एलोक्सन के शक्तिकृत एवं अशक्तिकृत अवस्था में मधुमेह की स्थिति में प्रतिकूल प्रभाव की जांच की गई। एलोक्सन को पौटेन्सी 6×, 30×, 200× को प्रयोग में लाया गया जिसमें एलोक्सन की 6×, 30×, 200× की खुराक मात्रा 50 मा०लि०/100 ग्रा०शा०व० में प्रतिदिन 30 दिन तक एल्बीनो चूहों को दी गई जिससे रक्त में शूगर की मात्रा निरन्तर कम होती गई जब अशक्तिकृत एलोक्सन से इसकी तुलना की गई। उत्तक विकृति जांचों से ज्ञात हुआ कि बीटा-कोशिकाऐं 30 से 40% क्रियाशील पाई गईं एवं बीटा कोशिकाओं पर क्षयकारी प्रभावों का भी असर नहीं पड़ा। औषध को बन्द करने के बावजूद भी रक्त में शूगर की मात्रा कम अवस्था में स्थायी बनी रही। ये निष्कर्ष, कंट्रोल (एल्कोहल पोषित एवं क्षारीय द्रव्य वाहक इत्यादि) के अध्ययन के आधार पर तुलना करने पर पाए गए।